गृह सज्जा के लिए लगाऐं : मनीप्लान्ट

पवन कुमार[1], हनुमान सिंह जाट[2], मुदस्सर अहमद खान[2] एवं संजय कुमार अत्तर[2]
1शोध छात्र, उद्यान विभाग, काशी हिन्दु विश्वविद्यालया वाराणसी,उत्तर प्रदेश
2कृषि महाविद्यालय, फतेहपुर–शेखावाटी, सीकर, राजस्थान
(श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर)
'मो. न. 91-8418940421 ई–मेल : hanumaniasbhu@gmail.com

आधुनिक युग में उच्च एवं मध्यम वर्गीय लोगों को मनीप्लान्ट उगाना एक फैशन बनता जा रहा है। मनीप्लान्ट का पौधा एक प्रकार कि बेल है, जिस पर किसी प्रकार के फूल या फल नहीं लगते है, फिर भी इसकी लोकप्रियता बढ़ने में तीन महत्वपूर्ण कारण है। पहला कारण, इसका नाम "मनीप्लान्ट" मनी अर्थात् धन से जुड़ा हुआ है। इसके नाम से लोगों के अर्न्तमन में यह धारणा बैठ चुकी है कि मनीप्लान्ट का पौधा घर में लगाने से धनसम्पदा भी बढ़ेगी। दुसरा महत्वपूर्ण कारण इसके पत्ती पान के पतो की तरह के नुकीले, मोटे, चिकने और चमकिले होते है। तीसरा महत्वपूर्ण कारण इस पौधें को आसानी से मिट्टी के गमलों, लटकने वाली टोकरियों तथा पानी से भरी कांच की बोतलों में भी सफलता पूर्वक उगाया/लगाया जा सकता है।इसलिये मनीप्लान्ट कि लोकप्रियता बढ़ रही है।

'मनीप्लान्ट' तो केवल इस पौधें का लोक–प्रिय नाम है परन्तु इसका सही नाम पो. थॉस स्क. न्डेन्स है, वैज्ञानिकों के अनुसार इसका वानस्पतिक नाम सिडाप्सस औरियस है और यह अरेसी कुल का सदस्य है। अब तक इसकी लगभग 40 किस्में देखी गई है।

मिट्टी के गमलों, लटकने वाली टोकरियों तथा पानी से भरी कांच की बोतलों में सफलता पूर्वक उगाया जा सकता है। यह पौधा हल्की धूप या छाया में अथवा तेज या हल्की रोशनी में कहीं भी उगाया जा सकता है। इसे स्थाई रूप से कमरें के भीतर, डाइनिंग टेबल पर, खिड़की या शोकेस आदि में कहीं भी पानी या मिट्टी में लगाकर रखा जा सकता है।

मनीप्लान्ट के पौधे का मात्र पानी में इतना अच्छा विकास आश्चर्यजनक है, और इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह है कि किसी अन्धेरें कोने में मात्र बिजली के बल्ब की रोशनी में भी मनीप्लान्ट के पौधें एक लता के रूप में फेलकर जिवित रहते है। खुली रोशनी, ताजी हवा और उपजाऊं मिट्टी में उगाने पर इसकी लता 20 से 25 फीट की लम्बाई तक फेल सकती है।

मनीप्लांट के पौधें का प्रर्वधन कलम द्वारा किया जाता है। साथ ही पौधें कि प्रत्येक गांठ पर निकलने वाली हवाई जड़े भी इसके प्रर्वधन का मुख्य स्त्रोत है। साधारणतया मनीप्लान्ट के पत्ते केवल 8 से 10 सेमी. व्यास के होते है। परन्तु इसमे निकलने वाली हवाई जड़े किसी वृक्ष के तने या कच्ची दिवार अथवा मौस घास से ढ़की हुई, लकड़ी के डण्डे आदि का सहारा लेकर पौधें को इतना विशाल बना सकती है साथ ही इसके पते 15 से 20 सेमी. व्यास के, चिकने और मोटे हो सकते है।

किस्में– मनीप्लान्ट को मुख्य रूप से चार किस्में अधिक लोकप्रिय है।

1. **गोल्डन क्वीनः–**पत्तियों पर हल्के पीले धब्बों वाली सुन्दर लोक प्रिय किस्म हैं।

2. **मार्बल क्वीनः–** सफेद सुन्दर पतों वाली हल्के हरे धब्बों से युक्त सुन्दर किस्म।

3. **सिल्वरमूनः–** चांदी की तरह चमकीली क्रीम रंग के आकर्षक धब्बें वाली किस्म।

4. **ग्रीन ब्यूटीः–** चिकने गहरे हरे रंग के सुन्दर पतों वाली किस्म।

एक अन्य बहुत बड़े आकार के पतों वाली पीले धब्बों से युक्त विशाल किस्म भी काफी लोक–प्रिय है जिसे पोथॉस मैकरोफिला कहते है।

मनीप्लान्ट की अच्छी वृद्धि के लिए हल्की रेतीली, उपजाऊ और नमीयुक्त मिट्टी होनी चाहिए। इसके पौधें हल्की छाया वाले ठण्डे और शुद्ध ताजी हवा वाले स्थान पर रखने से अच्छी बढवार करते है। साथ ही वर्षाकाल में पुराने पौधों को 2–3 वर्ष के बाद नई खाद व मिट्टी के मिश्रण के साथ नये गमलों में पुनःरोपण कर देना चाहिए। पुनःरोपण के समय हल्की कांट–छांट लाभकारी होती हैं। मनीप्लांट के मिट्टी में लगे पौधों को ताजे गोबर तथा हल्की मात्रा में नाइट्रोजन युक्त उर्वरक के मिश्रण से तैयार की गई तरल खाद हर 2–3 माह बाद अवश्य देनी चाहिये। पानी में लगाने के लिए हवाई जड़ों युक्त इसकी छोटी शाखा को काट कर कांच की बोतल, जार या बेकार बिजली के बल्ब आदि में लगाई जा सकती हैं। इसके कोई विशेष रोग व कीट आदि नहीं लगता हैं।